औषधिय वृक्ष (MEDICINAL TREES)

बबुल (ACACIA ARABICA)

इसका गोन्द – अतिसार, संग्रहणी, मधुमेह, प्रमेह, स्वप्न दोष में उपयोगी है। इसका छाल रक्त शोधक अत्यधिक मुत्र स्त्राव में उपयोगी, ताकतवर है। इसका व्यवहार आँख के रोगों के लिए किया जाता है। दाँत के रोगों मे इसके छाल या पत्त्ता के काढ़ा से कुल्ला किया जाता है। इसके बीज का चूर्ण, अर्जुन छाल का चूर्ण, कपर्दक, भष्म तीनों पीपल का लाख एवं मुर्वा सब बराबर भाग में मिलाकर 5 ग्राम प्रतिदिन लेने से हड्डी के टुटने के बाद के दर्द को ठीक करता है तथा हण्डी को जोड़ता है ।

खैर (ACACIA CATECHU)

इसके छाल का काढ़ा शरीर को चुस्त बनाता है। सभी प्रकार की खाँसी में इसका व्यवहार किया जाता है। गला में सुजन तथा सभी प्रकार के रक्त विकार में इसका सेवन किया जाता है। खदिरारिष्ट इससे बनी औषधि है जो कुष्ठ रोगों के लिए अति उपयोगी मानी जाती है। सोमराजी को इसके काढ़ा के साथ लेने पर सफेद दाग मिटता है।

इसकी छाल का चूर्ण 25 ग्राम, पानी 200 ग्राम, को उबालें 50 ग्राम जल बचने पर इस काढ़े को प्रतिदिन पीयें। इसका सत्व कत्था कहलाता है। कत्था भी सभी प्रकार के चर्म रोगों पर उपयोगी है। कत्था एक रत्ती अर्थात् 120 मि. ग्राम प्रयोग किया जाता है।

बड़ (FICUS BENGALENSIS)

इसका प्रयोग शरीर के किसी भी भाग से होने वाले क्षय को मिटाता है। यह जलन को मिटाता है। पचने में भारी है। शरीर के वर्ण को सुन्दर बना देता है। इसके इस गुण के होनें के कारण यह समस्त रोगों को नष्ट करने की क्षमता रखता है। साथ ही रोग रोधक गुण सम्पन्न भी होता है। यह पुराने से पुराने खांसी को मिटाता है। यह शरीर को बलवान बनाता है पर मोटा नही बनाता। रक्त को शुद्ध कर सभी रक्त रोगों को मिटाता है। स्त्रियों के सभी प्रकार के जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगो को यह मिटा देता है। परन्तु अधिक दिनों तक इसका सेवन करना पड़ता है। पुरूषों के स्वप्नदोष की भी यह अति उत्तम औषधि है। इसके जटा का दातुन दांत के लिए उपयोगी होता है। इसका काढ़ा प्रदर रोगों के लिए उपयोगी है। मधुमेह (डायवीटीज) में इसके छाल का काढ़ा रक्त एवं मुत्र शर्करा को मिटाता है। मधुमेह के कारण होने वाली किडनी, हृदय एवं स्नायविक दौर्बल्य को दुर करता है। ताकत एवं फूर्ति प्रदान करता है। इसके दूध को बतासा या चीनी के साथ सेवन करने से पैखाना के साथ आंव या खुन जाने के रोगों के लिए अतिउपयोगी है। इसके पत्तों का काढ़ा भी संग्रहणी, अतिसार में लाभदायक है। इसके फल को सुखा कर चुर्ण बनाकर मिश्री या अकेले खाने से बल की वृद्धि होती है तथा किसी भी प्रकार के रोगों से होने वाली कमजोरी को मिटाता है। यह जीवनी शक्ति को बल देता है।

मात्रा :– दूध 10 से 20 बुंद, छाल 10 से 15 ग्राम काढ़ा के लिए, कोमल पत्ता का चुर्ण 1 से 2 ग्राम। घनसत्व चौथाई ग्राम तक।

पीपल (FICUS RELIGIOSA)

यह भारतवर्ष के लोगों के लिए पवित्र वृक्ष है। इसे पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखने के लिए अति उपयोगी माना गया है। यह बलकारक है। खांसी, सर्दी, बुखार को मिटाता है। यह पचनें मे भारी है। यह शरीर के किसी भी अंग में होने वाले लाल–पीले दाग को मिटाता है। सुन्दर एवं कांतिमान बनाता है। स्त्री–पुरूष दोनों के जननेन्द्रिय विकार को मिटाता है। पीपल की जटा 5 ग्राम की मात्रा में दूध में पीस कर यदि वंध्या औरत महवारी शुरू होने से चौथे दिन के बाद 10 दिन पीये तो, स्त्रियो के बांझपन को भी यह मिटाता है। जलन, सुजन को मिटाता है। अम्ल पित्त को मिटाता है। घाव होने की प्रवृति को मिटाता है। यह सभी प्रकार के रक्त विकार कि दवा है। इसके कोमल पत्तों का सेवन रक्त

कैंसर पर भी उपयोगी है। वीर्य दोष को मिटाता है। इसकी छाल, फल, पत्ता सभी अंग प्रयोग में लिया जाता है। पुराने चोट के दर्द में इसकी तीन पत्तें एवं 1 ग्राम गुड़ 6 दिन से 21 दिन तक लेने से चोट का दर्द मिट जाता है। इसके कोमल पत्तियों का सेवन बल एवं पुरूषार्थ पैदा करता है। इसके फल का प्रयोग वीर्यवर्द्धन के लिए किया जाता है। गुड़ के साथ 3 पत्तें प्रतिदिन 21 दिन तक लेने से किसी भी प्रकार के चोट का दर्द मिटता है।

मात्रा :– इसके बीज का चुर्ण 2 से 3 ग्राम तथा 10 से 20 पत्ता का व्यवहार काढ़ा के लिए किया जाता है।

गुलर (FICUS GLOMERATA)

यह अति उपयोगी औषधीय वृक्ष है। इसका व्यवहार शरीर के अंग–प्रत्यंगों को पुष्ट करने तथा क्षय से बचने के लिए किया जाता है। इसका जड़, धड़, छाल, पत्ता, फल सभी औषधीय गुण सम्पन्न है। इसके फल जंगली या गरीब लोग पेट भरने के लिए भी खाते है। इसके फल की सब्जी पेट के लिए उपयोगी माना जाता है। यकृत, प्लीहा के विनिमय क्रिया को सुधारने के कारण समस्त शरीर पर इसका प्रभाव बलवर्द्धक, मांसवर्द्धक के रूप में देखा जाता है। इसके पत्तों के काढ़ा से प्रतिदिन आँख को साफ किया जाय, तो सभी प्रकार के नेत्र से बहनेवाले कीचड़ पानी को दूर करता है। सभी प्रकार के घाव, इसके काढ़ा से धोने से ठीक होते है। पित्त दोष को दूर करने के कारण, यह शरीर के रंग को निखारता है। चमकदार बनाता है। गठिला बनाता है। फल, छाल, पत्ता एवं टहनी बराबर भाग में लेकर कुटकर 4 गुणा पानी डालकर इसे उबालें, उबालनें के बाद एक चौथाई बच जाए तो इसे छान लें। इसको गुड़ या मिश्री मिलाकर पिलाने से कष्ट साध्य दम्मा भी कुछ ही दिन में दुर होता है। यह स्त्रियों के प्रदर रोग तथा पुरूषों के स्वप्नदोष को मिटाता है। मधुमेह में भी यह उपयोगी है परन्तु अन्य औषधियों के साथ। यह उदर के अल्सर को मिटाता है। सम्पूर्ण अंगो के, अल्सर को यह मिटा डालता है। इसका प्रयोग किसी भी रोग में किया जाय, कुछ न कुछ लाभ मिलेगा ही।

सेवन विधि और मात्रा :– इसके फल का सुखा चूर्ण 2 से 5 ग्राम तक व्यवहार किया जाता है। इसके सभी अंगो के मिलित भाग को 20 से 25 ग्राम कि मात्रा में लेकर, यवकुट कर व्यवहार करने से निर्देशित सभी रोग दूर होते है। इसके घनसत्व का सेवन चौथाई ग्राम तक सभी रोगों में लाभदायी है। इसका अर्क भी लाभदायक है। 10 ग्राम तक अर्क दिया जाता है।

पाकर (FICUS INFECTORIA)

यह सभी प्रकार के वैसे रोग जिसमें सुजन रहता है, को मिटाता है। गर्मी शांत करता है, बहुत से लोग जिनकी प्रकृति गर्म होती है। उन्हें इसका व्यवहार सर्व रोग नाशक एवं रोग रक्षक के रूप में करना चाहिए। यह जाननेन्द्रिय विकार को दूर करता है। असमय केस का झड़ना, पकना रोकता है। यह दाह नाशक है। रक्त–पित्त, जो एक भयानक रोग माना जाता है, मिटाता है। छाल, पत्ता, फल सभी अंग उपयोग में आता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– छाल का चूर्ण 2 से 5 ग्राम। पत्तों का चूर्ण 2 से 5 ग्राम। काढ़ा के लिए इसके सभी अंग 25 से 30 ग्राम तक व्यवहार में लिया जाता है।

सिरीश (ALBIZZIA LEBBECK)

यह मधुर तिक्त काषाय रसयुक्त है। यह गरम है। सभी प्रकार के वात रोगों की अच्छी दवा है। दर्द वाले प्रत्येक रोग को यह दूर करता है। फोड़ा, फुन्सी को भी मिटाता है। खांसी, व्रण एवं विष को भी मिटाता है। इसके बीज के माला को बच्चों के गले में बाँधने से सुखड़ा रोग से बचाव होता है। सर्प विष में यह उपयोगी है। वर्तमान वातावरण में पलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति किसी–न–किसी प्रकार के विष का शिकार हो जाते हैं। अतः सभी प्रकार की वैसी बिमारियाँ जो विषजन्य हो, यह ठीक करती है। छाल, फल, पत्ते सभी उपयोग में लिए जाते हैं। यह ज्वर की उत्तम दवा है। गला के रोग को मिटाता है।

सेवन विधि :– बीज का चूर्ण 1/2 से 1 ग्राम तक। छाल का चूर्ण 1 से 2 ग्राम तक प्रयोग में लेना चाहिए।

शाल (सखुआ) (SHOREA ROBUSTA)

इसका व्यवहार रक्तशोधन के लिए बननेवाली दवाओं में होता है। जिनके अंगो से अधिक पसीना आता हो, उन्हें इसके काढ़ा के व्यवहार से लाभ मिलती है। इसके छाल पत्तों को तील के तेल में पकाकर व्यवहार करने से कान का बहरापन तथा कान के सभी रोग मिटते हैं। कृमि के कारण होने वाली उपद्रव को भी यह मिटाता है। इसका गोंद सर्ज रस है। इसे 1 ग्राम की मात्रा में केला के साथ मिलाकर देने से पुरानी आंव, संग्रहणी मिटता है। 25 से 50 ग्राम छाल का काढ़ा शरीर को मजबूत बनाता है।

सलई (BOSWELLIA SERRATA)

यह शीतल गुण सम्पन्न है। ज्वर नाशक है। यह पौष्टिक है। अतिसार को दूर करता है। पित्त तथा कफ के रोगों को मिटाता है। यह रक्त पित्त को दूर करने में अति उपयोगी है। इसका गोंद वात नाशक है तथा व्रण एवं प्रदर रोग को दूर करता है। छाल या पत्ता का प्रयोग किया जाता है। सामान्य बिमारियों में गोंद का व्यवहार पौष्टिकता को प्राप्त करने के लिए करते है। यह गुगुल के समान, गुणकारी है। इसलिए इसके गोंद का व्यवहार 80 प्रकार के वात रोगों को दूर करता है। मात्रा चौथाई ग्राम से एक ग्राम तक इसका सेवन किया जाता है।

शीशम (DALBERGIA SISSOO)

यह गरम है। गर्भ को नष्ट करने वाला है। यह दुबला बनाता है। चर्म रोग को दूर करता है। सफेद कुष्ठ पर इसको खाने–लगाने में प्रयोग किया जाता है। वृक्क (किडनी) के बहुत से रोगों को सुधारने में सहयोगी हैं। यह रक्त की वृद्धि भी करता है। कफ नाशक लाभ प्राप्त करने के लिए 10 से 20 ग्राम पत्तों का काढ़ा बनाकर दिया जाता है। इसका चूर्ण 2 से 3 ग्राम तक दिया जाता है। इसके लकड़ी से पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाला जाता है। जिसे चर्म रोग पर लगाया जाता है।

अर्जुन (कहुआ) (TERMINALIA ARJUNA)

यह ह्रदय रोग के लिए अति उपयोगी औषध है। सम्पूर्ण स्नायु संस्थान के रोगों को मिटाता है। किसी भी प्रकार के क्षय को मिटाता है। चोट से होने वाली रोगों को भी यह दूर करता है। प्रमेह, व्रण को दूर करता है। दम्मा, खांसी जो स्नायविक होते हैं, उन्हें मिटाने में यह अद्भुत है। प्रतिदिन 10 से 15 ग्राम छाल का काढ़ा दूध के साथ पीना चाहिए या छाल का चूर्ण 1 से 2 ग्राम तक लेना चाहिए। यह बदन को गठिला, सुन्दर बनाता है।

विजय सार (असन) (PTEROCARPUS MARSUPIUM)

यह चर्म रोगों के लिए उपयोगी है। केश को उत्तम बनाता है। यह शक्ति वर्द्धक, रसायन है। सफेद कोढ़ को मिटाता है। प्रमेह, गुदा मार्ग की क्रीमी तथा रक्त–पित्त को मिटाता है। रक्त शर्करा या मुत्र शर्करा जो भी हो इसके काष्ठ पात्र में रात भर पानी रखकर कुछ दिनों तक सुबह में पीने से आराम मिलता है। इसके काठ का व्यवहार चर्म रोगों में किया जाता है। 5 से 10 ग्राम छाल या काठ को कुटकर 100 ग्राम जल में उबालें। आधी बचने पर पियें। सभी गुण प्राप्त होगा। भयानक से भयानक कुष्ट रोग को इसके छाल का काढ़ा 3 माह तक सेवन कराने से मिटा देता है।

रीठा (SAPINDUS TRIFOLIATUS)

यह तीनों दोषों को नष्ट करता है तथा ग्रह बाधा को दूर करता है। भूत पिसाच के आवेश को नही होने देता। गर्भ को गिरा देता है। इसका व्यवहार बालों को साफ तथा सुन्दर बनाने के लिए किया जाता है। इसका फल अलग जलाकर पीस कर लेने से दर्द इत्यादि बवाई रोगों में लाभ करता है। 10 से 15 ग्राम छाल का काढ़ा का व्यवहार इसके लिए किया

जा सकता है। इसका धनसत्व उत्तम दर्द हर दवा बनता है। जिसकी 1/20 ग्राम की मात्रा में ही सभी दर्द दूर होता है। इसके फल के काले राख को एक ग्राम खिलाने से बवासीर ठीक होता है। इसके मंजन से दाँत मजबूत होता है।

पुत्रंजीवी (पितौजिया) (PUTRANJIVA ROXBURGII)

यह स्वादिष्ट, कटु तथा लवण रस युक्त है। यह वीर्य को बढ़ाता है। गर्भ देता है। मल एवं मुत्र को साफ करता है। यह कफ तथा वायु रोगों का दूर करता है। यह शीत पित्त जिसे आम लोग जुलपित्ति उछलना कहते हैं को ठीक करता हैं। बच्चे के गले में रोगरक्षार्थ, इसके बीज की माला पहनाया जाता है। जिन लोगों को किसी भी वस्तु, धुल, धुँआ, फल, दही, वातावरण से एलर्जी हैं, उन्हें इसका 2 से 3 पत्ता प्रतिदिन पीसकर कुछ दिन दूध के साथ लेना चाहिए। यह एलर्जी का संकट दूर करेगा। तीन माह तक इसका प्रयोग निश्चित लाभकारी है। गर्भ की प्राप्ति तथा गर्भाशय की शुद्धि हेतु इसके 3 पत्तों को महवारी से मुक्त होने के अन्तिम दिन से प्रतिदिन 4 दिन तक दूध के साथ पीसकर खाली पेट दिया जाता है। जिससे गर्भाधान होता है।

जीयल (ODINA WODIER)

यह मधुर रस की गर्म औषधि है। इसमें नमक की पर्याप्त मात्रा है। यह योनी शोधक, फोड़ा, फुन्सी, घाव को दूर करने वाला, ह्रदय रोग के लिए उत्तम, जीवन शक्तिवर्द्धक है। इसके छाल का काढ़ा व्यवहार किया जाता है। इसमें बहुत गोंद निकलता है। अतिसार तथा बल वीर्य को पुष्ट करने के लिए इसका व्यवहार किया जा सकता है। इसके जड़ के छाल का चूर्ण 5 ग्राम मधुमेह में लाभ करता है। इसका गोन्द पौष्टिक एवं उदर रोगों के लिए लाभदायक है। 2 से 3 ग्राम की मात्रा में लेनी चाहिए।

ढ़ाक (पलास) (BUTEA MONOSPERMA)

यह लगभग सभी रोगों को दूर करने के लिए प्रसिद्ध है। यह अग्नि दीपक है। वीर्यवर्द्धक है। पाचन संस्थान के अंगों को मजबूती प्रदान कर उदर रोगों को एवं कब्ज को दूर करता है। जंगली लोग इसके गोन्द का व्यवहार टुटे हुए हड्डियों को जोड़ने के लिए करते है। इसका गोन्द पेट के रोगों के लिए भी लाभदायक है। पौरूष शक्ति प्रदान करता है। यह सभी प्रकार के वात रोगो को दूर करता है। वायु गोला को नही बनने देता। बच्चेदानी के रोगों को भी मिटाता है। यह बवासीर (अर्श) को दूर करता है। इसका सेवन मधुमेह में भी किया जाता है। इसके बीज कृमिनाशक तथा मधुमेह नाशक है। छाल, पत्ता, फुल, फल सबका व्यवहार होता है। इसके प्रयोगकाल में जो भी बच्चे जन्म लेते है वे तेजस्वी रहते है।

सेवन विधि और मात्रा :– इसके छाल का चूर्ण 1 से 2 ग्राम तक । फूल का चूर्ण 1/2 से 1 ग्राम तक। पत्तों का चूर्ण 2 से 3 ग्राम तक। गोन्द आधी से एक ग्राम तक लिया जाता है।

शाल्मलि (सेमल) (SALMALIA MALABARICA)

यह विषनाशक औषध है। शक्तिवर्द्धक तथा रसायन है। इसका तासीर शीतल है। यह कफ रोगों में लाभदायी नहीं होता। यह वात रोग तथा पित्त रोग की औषधि है। क्षय एवं कमजोरी जनक लक्षणों में इसका प्रयोग सफलता पूर्वक किया जाता है। इसका प्रयोग गठिया में भी किया जाता है। किसी भी प्रकार से यदि रक्त का स्त्राव हो रहा हो तो उसे यह बन्द करता है। इसका गोंद उदर रोगों में काफी लाभदायी है। इसके छाल का रस प्रदर रोगों में 10 से 20 ग्राम गुड़ या चीनी के साथ दिया जाता है। वीर्य दोष को भी यह मिटाता है। इसका गोंद मोचरस कहलाता है। जो वीर्य क्षय, प्रदर तथा कमजोरी को दूर करता है। इसके जड़ के छाल 5 ग्राम को पीस कर देने से सफेद प्रदर मिटता है। स्वप्न दोष दूर होता है।

इसके सेवन की मात्रा :– जड़ के छाल का चूर्ण 2 से 3 ग्राम। गोन्द 1 से 2 ग्राम। फूल का चूर्ण 2 ग्राम बीज का चूर्ण आधी ग्राम लेनी चाहिए।

सिहोड़ा (STREBLUS ASPER)

यह अति उपयोगी औषध वृक्ष है। यह रक्त–पित्त को दूर करती है। बवासीर को मिटाती है। अतिसार में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसके दतुअन से दांत एवं मसुढ़ों के रोग मिटते है। 25 ग्राम पौधों की काढ़ा आन्तरिक प्रयोग में व्यवहार किया जाता है।

अमलतास (CASSIA FISTULA)

यह बड़ा वृक्ष है। झारखण्ड के जंगलों में भी यह पाया जाता है। इसे वाटिका में लगातें भी है। इसका फूल अति सुन्दर तथा फल 1 से 2 फीट तक लम्बी लगभग एक इंच मोटी फल लगता है। इस पौधे को अत्यधिक लोग पहचानते है। यह अति उपयोगी औषधिय पौधा है।

यह कब्ज की सर्वोतम औषधि है। इसके प्रयोग से हानि नहीं होती। ज्वर की अवस्था में भी इसे दिया जाता है। मल के संचय से कभी– कभी आम वात एवं गठिया हो जाता है। इसका गुद्दा मल का भेदन कर गठिया आम वात को मिटाता है।

इसके छाल के काढ़ा से गराड़ा करने पर गले की गाँठ सुख जाती है। अतः टॉन्सिल पर इसका प्रभाव अच्छा पड़ता है। इसके पत्तों का रस अर्दित लकवा में पिलाया तथा लगाया जाता है। इसकी मूल तीव्र विरेचक एवं ज्वरहर होती है। इसके पके फल के भीतर के गुद्दा का प्रयोग किया जाता है। मात्रा 2 से 4 ग्राम प्रतिदिन। इसका बीज वमन कराता है। अतः इसे (बीज को) प्रयोग के पूर्व निकाल देना चाहिए।

लोध (SYMPLOCOS RACEMOSA)

यह बड़ा वृक्ष है। 20 फीट से भी ऊँचा हो सकता है। इसकी छाल गहरे धुसर वर्ण की खुरदरी होती है। यह आँखों की बीमारियों के लिए उत्तम है। यह सुजन मिटाता है। अतिसार का नाशक है। सभी प्रकार के रक्त स्त्राव एवं प्रदर की अवस्था में इसका व्यवहार किया जाता है। संपूर्ण शरीर में शोथ एवं ज्वर में भी इसका व्यवहार किया जाता है। फिल पाँव एवं फाइलेरिया में इसका व्यवहार बहुत ही लाभप्रद पाया जाता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके छाल का चूर्ण 2 ग्राम तक प्रतिदिन दिया जाता है।

भिलावा (SEMICARPUS ANACARDIUM)

यह अति दिव्य औषध है। यह रसायन गुण सम्पन्न है। वात एवं कफ के रोगों को यह दूर करता है। स्नायु संस्थान के सभी रोगों को दूर करने की इसमें क्षमता है। बलकारी एवं सभी प्रकार के चर्म रोगों की औषधि है। आमाशय एवं गुदामार्ग पर इसका असर तुरन्त होता है। यकृत की क्रिया को संतुलित करता है। इसलिए यह अग्निवर्द्धक, भुखवर्द्धक भी है। इससे नाड़ी की गति सुधरती है। हृदय को बल मिलता है। यह मन के थकावट को मिटाता है। इसका प्रयोग बहुत सावधानी से किया जाता है। इसके सेवन से हानि भी होती है। अतः इसके प्रयोग को किसी विद्वान वैद्य की देख रेख में करें।

गम्हार (GMELINA ARBOREA)

यह अति प्रसिद्ध आयुर्वेद के दशमुल औषधि का एक अंग है। यह शरीर के सभी संस्थानों को बल देता है। मन मस्तिष्क के लिए भी यह पौष्टिक है। यह मल भेदक है। जिससे हठिला किस्म के कब्जियत की यह उत्तम दवा बन जाती है। यह पाचन शक्ति को मजबूत करता है। बवासीर, विष , दाह की उत्तम औषधि है। इसके कोमल पत्ते शीतल तथा स्नेहन करने वाले है। जिससे शरीर के अन्दर संतुलित आहार की कमी से होने वाले रोगों की औषध बन जाती है। फल से प्यास मिटती है। दाह का समन होता है। रक्त–पित्त को मिटाता है। जड़–दीपन, पाचन, बल देने वाला तथा अनुलोमक

है। फूल ताकत प्रदान करता है। वीर्यवर्द्धक है। बीज से एक प्रकार का तैल निकलता है जो कफ के सभी रोगों को दूर करता है। शरीर के बनावट में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी होने पर इसका तैल उसे सुधारता है। मुलहठी एवं इसके छाल से बना हुआ काढ़ा मधु के साथ देने से दुध बढ़ता है। जननेन्द्रिय तथा स्तन को निरोग बनाता है। इसके सभी अंग काम में आते है। इसके पत्तों के रस से पकाए गए तैल सभी अंगों को पौष्टिकता प्रदान करते है।

सेवन विधि :— छाल का चूर्ण 2 से 3 ग्राम। काढ़ा 20 से 25 ग्राम। फल 1 से 2 ग्राम। पत्ता 2 से 4 ग्राम तक लेना चाहिए।

सोना—पाठा (OROXYLUM INDICUM)

यह वृक्ष प्रसिद्ध दशमुल द्रव्य का एक अंग है। यह वायु तथा कफ के सभी रोगों को मिटाने में सक्षम है। हृदय रोगियों के लिए यह अति उत्तम है। अर्जुन के छाल एवं सोनापाढ़ के छाल काढ़ा लगभग सभी हृदय रोगों को मिटाता है। यह वायु गोला को नाश करता है। पेट में वायु बनने से होने वाले प्रत्येक विकार को यह दूर करता है। बवासीर को मिटाने में यह सक्षम है। यह किडनी के रोगो को दूर करता है। आम—वात अतिसार को भी मिटाता है। यह दर्द को दूर करने की उत्तम औषधि है। सुजनजन्य बिमारियों में काफी लाभदायक है। इसके 1 से 2 ग्राम छाल को दूध के साथ पीसकर देने से मिर्गी रोग ठीक हो जाता है। कान के पास सुजन यदि हो जाता है तब इसका काढ़ा बनाकर खिलाया तथा लगाया जाता है। कब्जियत में इसके बीज का प्रयोग करते है। अन्य रोगों में छाल का काढ़ा दिया जाता है। 10 से 20 ग्राम छाल का काढ़ा या 1 से 2 ग्राम बीज का चूर्ण सेवन करना चाहिए।

निम्ब (नीम) (AZADIRECHTA INDICA)

नीम बहुत ही प्रसिद्ध औषधिय वृक्ष है। आज विश्व भर के लोग नीम के गुणों से लाभ ले रहे हैं। यह आँख के लिए हितकर हृदय के लिए अहितकर, प्रमेह रोग को दूर करने वाला है। इसका छाल, पत्र, गोन्द, फल, बीज, पुष्प, ताड़ी एवं तेल चिकित्सा में व्यवहार किया जाता है। इसके छाल का चूर्ण मलेरिया के लिए उपयोगी है। सभी ज्वर पर इसका व्यवहार किया जाता है। इसका तेल गरम, वातहर , कृमिनाशक, उत्तेजक, केश के लिए उत्तम है। इसका तेल इसके सभी अंगो की अपेक्षा अधिक लाभदायी है। चर्म रोगों पर इसका सफलता पूर्वक व्यवहार किया जाता है। गर्भ पर भी इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। गर्मी, सुजाक पर भी इसके पत्तों को त्रिफला के साथ देने से लाभ होता है। खुजली, इक्जिमा पर इसका प्रयोग सफलतापूर्वक होते रहा है। इसका फल विरेचक तथा स्नेहन है। इसके फूल पाचन की खराबी में देते है। इसके ताड़ी में शर्करा , अल्बूमीन, गोन्द, लौह तत्व, कैल्सियम होता है। यह दीपन पोषक , बलप्रद, कृमिघ्न रसायनहै। चर्म रोगों को मिटाता है। सभी अंगो का चूर्ण या काढ़ा व्यवहार में लेते है।

मात्रा— छाल का चूर्ण 2 से 3 ग्राम । छाल का काढ़ा 15 से 20 ग्राम । फूल 1 से 2 ग्राम । बीज 1 ग्राम। ताड़ी 20 से 30 ग्राम। पत्तों का चूर्ण एक ग्राम तक देते है।

फरहद (ERYTHRINA INDICA)

इसका छाल ज्वरहर है। फरहद कृमि नाशक है। बल देता है। शोथ (सूजन) को मिटाता है। इसके पत्ते मुत्रल, मृदु विरेचक, आर्तव जनक, दुग्धवर्द्धक है। यह कुचले के जहर को मिटा देता है। इसकी छाल रक्त युक्त आंव को बन्द करता है। वाजीकरण के लिए सफेद फूल के फरहद के कोमल जड़ को दूध के साथ देते है। नारीयल के दूध के साथ इसका व्यवहार किया जाता है। इसके सभी अंग—प्रत्यंग काम में आते हैं। दर्दनाशक कुछेक द्रव्यों में से यह एक है।

मात्रा :— पत्तों का चूर्ण 2 से 3 ग्रा0 / काढ़ा 20 से 30 ग्रा0 / छाल का चूर्ण एक से दो ग्रा0 ।

कचनार (BAUHINIA VARIEGATA)

कचनार की छाल कंठ माला (ग्लैन्ड टी. बी.) की उत्तम औषधि है। इसका व्यवहार कैंसर रोग को दूर करने के लिए सफलता पूर्वक की जाती है। किसी भी भाग में गांठ हो तो उसे गला देता है। इसको कुष्ठ, चर्म रोग, अतिसार में देते है। दांत से या शरीर के किसी भी अंगो से खुन निकलता हो तो कुछ दिन तक इसका काढ़ा पीने से रक्त का बहना बंद हो जाता है। इसके फूल का चूर्ण अर्स में मट्ठे के साथ दिया जाता है। कमल के जड़ एवं कचनार के पत्ते को पीसकर मन्दबुद्धिता पर प्रयोग करने से कुछ दिनों में ही मन्द बुद्धिता जाती रहती है।

इसका साग भी लोग खाते है। इसकी फूल की सब्जी बनती है। इसके छाल का काढ़ा सभी रक्त दुषण जन्य रोगों में प्रयुक्त होता है। इसको पौष्टिक बनाने के लिए इसके काढ़ा को दूध के साथ लिया जाता है। इसकी साग वाली प्रजाती अलग होती है पर गुण में सभी समान है। इसका नाम कोनार है।

सेवन विधि और मात्रा :– छाल का चूर्ण 2 से 3 ग्राम। फूल 2 से 5 ग्राम। पत्ते 2 से 3 ग्राम व्यवहार किया जाता है।

सहिजना (MORINGA PTERYGOSPERMA)

यह अतिउपयोगी आयुर्वेदिय औषधिय वृक्ष है। इसके फल को लोग सब्जी में खाते है। इसका गोंद पौष्टिकता के लिए तथा पेट के रोगों के निवारण के लिए खाते है। यह भूखवर्द्धक है। मल को बांधने वाला, आँख के लिए हितकर है। सुस्ती को दूर करता है। कृमि एवं मेद को मिटाता है। विषनाशक है। प्लीहा के सूजन को मिटाकर आंतरिक शरीर क्रिया के चयापचय को सुधारता है। इसका सभी अंग उपयोगी है। इसका काढ़ा गृध्रसी (सायटिका) को मिटाता है। हींग, सेन्धानमक, शोठ एवं भुजा हुआ शोधित सुहागा सब समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर इसके रस के साथ मटर बराबर गोली बनाकर व्यवहार करने से पेट के सभी रोग दूर होते है। ब्लड प्रेशर के लिए भी यह उपयोगी है।

सेवन विधि और मात्रा :– इसके रस को 1 ग्राम तक, इसके गोंद को 2 ग्राम तक, इसके पत्ते के चूर्ण को 1 ग्राम तक, सब्जी के रूप में 200 ग्राम तक लेना चाहिए।

वृक्ष करंज (PONGAMIA GLABRA)

करंज दो प्रकार का होते है। एक बड़ा वृक्षाकार होता है।दूसरा लता करंज होता हैं। लता करंज में कांटे होते हैं। इन दोनो के बीजों की मज्जा, गरम, मलेरिया बुखार को दूर करने वाला, सूजन मिटाने वाला, दर्द दूर करने वाला होता है। दर्द, श्वास, वात, विकार, चर्म रोग, घाव पर इसका व्यवहार अति लाभदायक है। इसकी थोड़ी मात्रा शक्ति वर्द्धक मानी जाती है।इसका तेल मुंह पर के दाग को मिटाता है। आमवात एवं अन्य दर्द पर लगाने के काम आता है। पुराने घाव पर लगाने से उनको भरता है। चर्म रोग पर इसका मलहम प्रयुक्त होता है। यह रक्त शोधक है। इसके 5 ग्राम छाल को पानी के साथ पीसकर 15 दिनों तक प्रतिदिन यदि पिया जाय तो बवासीर को नष्ट करता है। इसके पीने के बाद यदि उल्टी की शिकायत हो तो गुड़ खाने से दबती है। इसका तेल अन्य कामों में भी व्यवहृत होता है।

सेवन विधि एवं मात्राः–इसके पत्तों के चुर्ण 1 से 3 ग्राम तक, छाल का चुर्ण 2 से 3 ग्राम तक, इसका रस 1 ग्राम तक, फल आधी ग्राम तक व्यवहार में आता है।

अंकोल (ALANGIUM LAMARCHI)

यह उपयोगी औषधिय वृक्ष है। इसकी छाल, पत्र, बीज, एवं तेल का चिकित्सा मे व्यवहार होता है।यह गरम उल्टी कराने वाला, मुत्रल, पसीना लाने वाला, पैखाना कराने वाला, ज्वरहर, कृमिघ्न एवं विषहर औषधि है। कोढ़, सफलिस चर्म रोग का नाशक है। इससे जीवन की विनिमय क्रिया सुधरती है जिससे यह अति उपयोगी बन जता है। वृक्क के सूजन में भी इसका व्यवहार किया जाता है। इसका व्यवहार सर्प विष को दूर करने के लिए भी किया जाता है। इसकी छाल

10 ग्राम, गोलकी 10 ग्राम दोनों को बारिक पीसकर एक–एक रत्ती की गोली बनाकर सुबह शाम देने से बवासीर दूर होता है। श्वास कास में भी उपयोगी है। इसके काठ को सदैव हाथ में धारण करने से अपरस ठीक होता है। नींबू के रस में चन्दन जैसा इसकी लकड़ी घीसकर 1 ग्राम लेने से दम्मा दूर होता है।

सेवन विधि तथा मात्रा :– इसकी छाल 100 मि. ग्राम का प्रयोग किया जाता है। इसके 1 से 2 पत्तों का काढ़ा भी लाभदायक होता है। इसके सेवन से हानि भी हो सकती है। अतः किसी विद्वान चिकित्सक के सलाह से ही इसका व्यवहार करना चाहिए।

मौलसीरी (MIMUSOPS ELENGI)

यह दांत के बिमारियों को मिटाने के लिए हजारों वर्ष से प्रतिष्ठित औषधि है। इसकी छाल का काढ़ा दांत के दर्द को मिटा देता है। इसका फूल काफी सुगंधित होता है। विषनाशक है। स्त्रियों के जननेन्द्रिय में होने वाले दर्द की उत्तम दवा है। दाह, कुष्ठ, तृषा इन सबको नष्ट करता है। इसके फूल का प्रयोग मानसिक कमजोरी तथा उत्साह में कमी होने को दूर करता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके छाल के चूर्ण से दांत धोने से दांत मजबूत होता है। फूल 2 ग्राम, छाल का चूर्ण 2 से 5 ग्राम दिया जाता है।

अशोक (SARACA INDICA)

यह वृक्ष प्राचीन काल से स्त्री रोगों की उत्तम औषध के रूप में व्यवहृत होती रही है। यह स्त्रियों के अनियमित मासिक धर्म के अधिक रक्त स्राव की उत्तम औषध है। यह शरीर के सौन्दर्य की भी वृद्धि करता है। वात दोष को मिटाता है। यह गला के ग्रंथियों की सूजन को दूर करता है। कृमिनाशक है तथा यक्ष्मा रोग की दवा है । शरीर से सभी प्रकार के विष को निकाल बाहर करता है अतएव यह विषनाशक औषध के रूप मे व्यवहृत होता है। यह रक्त के सभी बिमारियों को मिटाता है। यह पाचन संस्थान के अवयवों में होने वाले गांठ अर्वुद को मिटाता है। स्त्रियों के बच्चे दानी एवं जननेन्द्रिय से संबंधित बिमारियों को मिटाता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– 15 से 20 ग्राम छाल के काढ़ा प्रतिदिन देने से सभी रोग दूर होते है। छाल का चूर्ण 2 से 5 ग्राम तक दिया जाता है।

मुचकुन्द (PTEROSPERMUM SUBERIFOLIUM)

यह शरीर के दर्द की उत्तम एवं सिद्ध औषध है। इसका शर्बत वीर्य के पतलापन को मिटाता है। इसके फूल का सेवन सभी प्रकार के विष का नाश करता है। मन मस्तिष्क कि गर्मी को शान्त करता है। बल देता है। विषनाशक है। शीतल होने के चलते यह पित्त के रोगों को दूर करता है। इसका फूल विशेष व्यवहार में आता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके फूल 10 ग्राम तक, पत्ते 5 ग्राम तक, छाल 5 ग्राम तक का प्रयोग होता है।

अगस्त (SESBANIA GRANDIFLORA)

इसका फूल सब्जी के रूप में प्राचीन काल से व्यवहार में लाया जाता है। जंगली आदिवासी लोगों का मानना है कि इसके फूल की सब्जी 10 से 20 दिन खा लेने से पूरे 1 वर्ष जक ज्वर नहीं होता। यह खून के लिए उत्तम है। जलन और सुस्ती अति कमजोरी वाले रोगियों के लिए यह अति लाभदायक है। यह सर्दी जुकाम को दूर करता है। इसका छाल मस्तिष्क के रोगों को मिटाता है। इसको मलेरिया बुखार की दवा के रूप में व्यवहार किया जाता है।
स्माल पाक्स में इसका काढ़ा लाभदायक है।

सेवन विधि और मात्रा :– इसके छाल का रस 10 से 15 ग्राम तक प्रतिदिन लेने से ज्वर इत्यादि में लाभदायी है। इसके फूल की सब्जी 50 से 100 ग्राम ली जा सकती है।

आम (MANGIFERA INDICA)

इसके वृक्ष का फल, फूल, पत्ता, छाल, जड़ सभी का व्यवहार औषधि द्रव्य के रूप में होते हैं। इसका फूल ठंडा है। रूचिकारक है। पैखाना को बाँधने वाला है। वायु को बढ़ाता है। पतला पैखाना को रोकता है। कफ, पित्त के रोगों को मिटाता है। प्रमेह रोग पर इसका व्यवहार लोग बहुतायत से करते है। इसके छाल का प्रयोग मधुमेह तथा पेचिस में किया जाता है। आम कि गुठली से तेल निकलता है जो सौन्दर्यवर्द्धक है। पत्तों का काढ़ा भुख बढ़ाता है। ज्वर नाशक है। फल पौष्टिक रसायन है। यह पोषक तत्वों की पूर्ति करता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसकी छाल एवं पत्तों का चूर्ण 2 से 5 ग्राम तक प्रतिदिन प्रयोग किया जाता है। इसके फूल का चूर्ण 2 से 3 ग्राम प्रयुक्त होता है। इसका काढ़ा 20 से 30 ग्राम तक प्रयुक्त होता है।

आमड़ा (SPONDIAS PINNATA)

यह बहुत उपयोगी पौधा है। इसके आचार मुरब्बा का सेवन किया जाता है। यह कफ को बढ़ाता है। वीर्यवर्द्धक है। संतुष्टी प्रदान करता है। भूख वर्द्धक है। यह वायु को निकलने नही देता। बलकारी है। क्षतज काश को दूर करता है। यह खट्टा रस का होते हुए भी बलवर्द्धक तथा सभी प्रकार के क्षय को दूर करता है। रक्त विकार की दवा है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके फल की चटनी आचार का प्रयोग किया जाता है। इसके चूर्ण की मात्रा 2 से 5 ग्राम है।

कटहल (ARTOCARPUS HEROPHYLLUS)

इसका व्यवहार सब्जी में भी होता है। इसका पका फल शीतल, मधुर अम्लपित्त तथा वायुनाशक, मांसवर्द्धक शुक्राणुजनक है। रक्त, पित्त, क्षय तथा व्रण को दूर करता है। इसके बीज को सुखाकर इसका आटा भोजन के रूप में पौष्टिक आहार बन जाता है। बल वीर्य की वृद्धि करता है। यह पचने में भारी होता है। अतएव जिनकी पाचन अग्नि कमजोर हो उन्हें इसे नही लेना चाहिए।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके छाल के चूर्ण 2 से 5 ग्राम। इसके फल का रस 20 से 30 ग्राम, इसके बीज का आटा 50 से 100 ग्राम तक व्यवहार में आता है।

कदम्ब (ANTHOCEPHALUS INDICUS)

यह अति प्रिय वृक्ष है। जिसकी चर्चा सर्वत्र है। कदम्ब मदिरा संधान कराने में उत्तम है। इसकी मदिरा देवताओं को प्रिय रही है। इसका फल चटनी आचार के रूप में खाया जाता है। पका हुआ फल भोजन के अंग के रूप में व्यवहार किया जाता है। यह पेट में वायु का संचय करता है। अतएव जिन्हें वायु दोष (गैस) हो उन्हें इसका व्यवहार नही करना चाहिए। यह दुग्धवर्द्धक है। इसके छाल का प्रयोग बुखार में लाभदायक है। इसका उपयोग अन्य रोगों में किया जाता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसमें छाल के चूर्ण 3 से 5 ग्राम । फल का सूखा चूर्ण 2 से 3 ग्राम तक दिया जाता है।

बड़हर (ARTOCARPUS LAKOOCHA)

यह रस रसायन बनाने के काम में अधिकतर व्यवहार में आता है। इसके फल के रस सभी प्रकार के रत्नों को भष्मीभूत करने के कामों में व्यवहृत होता है। इसके कच्चे फल अत्यन्त हानिकर परन्तु पके फल वात एवं पित्त के रोगों को दूर करने वाला भूख वर्द्धक तथा वृष्य होता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके 5 से 10 ग्राम चटनी आचार का व्यवहार किया जाता है।

ताड़ (BORASSUS FLABELLIFORMIS)

यह उपयोगी वृक्ष है। इसके फल को पकने पर खाया जाता है। यह ताकतवर होता है तथा पित्त के दोषों को बढ़ाता है। इसके डंठल के भष्म से मासिक धर्म आता है। इसके ताड़ी का उपयोग वल्य एवं मदकारी के रूप में करते है। क्षय रोगी के लिए यह अमृत है। वायु दोष को यह मिटाता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके बलुड़ी का काढ़ा 15 से 20 ग्राम, इसका काला भष्म 1 से 2 ग्राम देना चाहिए।

बेल (AEGLE MARMELOS)

इसका प्रयोग भारतीय लोग अधिक करते है। इसके पके फल का शर्बत गर्मी के दिनों में करते है। यद्यपि यह बहुत लाभदायी नही होता। बेल के कच्चे फल को आग में पकाकर खाने से यह अमृत के जैसा लाभकारी हैं। यह कफ, वात पित्त रोग का नाशक है। यह अग्निवर्द्धक है। पाचक भी होता है। इसके पत्तों का व्यवहार मधुमेह के शमन के लिए करते है। इसके छाल दशमुल की प्रसिद्ध औषध है। इसके बीज में तेल होता है। वह भी औषधिय उपयोग में काम आता है। इसका फूल भी काम में आता है। इसके जड़ का सेवन रोग रक्षक होता है।

सेवन विधि और मात्रा :– पत्तों का चूर्ण 2 से 3 ग्राम। फूल 1 से 2 ग्राम छाल का चूर्ण 3 से 5 ग्राम। बेल का चूर्ण 2 से 3 ग्राम। इसके बीज का तेल अधिकतम आधी से 1 ग्राम तक दिया जाता है। जड़ के छाल का चूर्ण 2 से 3 ग्राम प्रतिदिन दिया जाता है।

कैथ (FERONIA ELEPHANTUM)

इसका फल बेल के समान होता है। पर बेल की गुद्दी मीठा होता है। यह पकने पर खट्टा लगता है। यह पचने में हल्का तथा पचाने के लिए भी इसका व्यवहार होता है। गला के सभी रोगों को दूर करता है। यह मधुमेह की अति उत्तम औषधि है। कहावत है कि गणेश जी को मधुमेह जब हुआ तो कैथ के फल का व्यवहार कर वे ठीक हुए। इसके छाल गाँठ को दूर करने वाला माना जाता है। पत्ती का व्यवहार भी ज्वरादि में होता है।

सेवन विधि और मात्रा :– इसके छाल का चूर्ण 2 से 5 ग्राम तक, इसके गुद्दा का चूर्ण 3 से 5 ग्राम तक प्रयोग किया जाता है।

कुचिला (STRYCHNOS NUXVOMICA)

यह जहरिली औषध है। इसका व्यवहार आयुर्वेद होमियोपैथ एवं आधुनिक औषधि विज्ञान में बहुत होता है। यह प्रभावकारी औषध है। यह कफ, पित्त तथा रक्त विकार को दूर करता है। इसका प्रयोग आम वात गठियां में सफलता पूर्वक किया जाता है। बहुत से आयुर्वेदिय औषध योगों में व्यवहृत होता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– यह जहरिली औषध है। इसके बीज को शोधित करके व्यवहार किया जाता है। 10 मी.ग्राम से 20 मी.ग्राम तक इसका प्रयोग होता है। इसे बहुत सावधानी से व्यवहार करना चाहिए।

बड़ी जामुन (EUGENIA JUMBOLANA)

इसका फल स्वादिष्ट, रोचक होता है। इसके पके फल को काफी चाव से लोग खाते है। इसके बीज का प्रयोग उदर रोग, मधुमेह के लिए होता है। इसकी छाल का स्वरस 10 ग्राम यदि आंव युक्त मल गिरता हो तो एक दो बार पिलाने से रोग मुक्त कर देता है। इसके छाल का एवं बीज का प्रयोग मधुमेह में लाभदायक है। मधुमेह के दवाओं में यह पड़ता है। इसके सभी अंग उपयोगी है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके छाल का चूर्ण 2 से 3 ग्राम तक, पत्तों का चूर्ण 2 से 3 ग्राम तक, बीज का चूर्ण 2 से 3 ग्राम तक किया जाता है।

छोटी जामुन (काला जामुन) (PERMNA HERACEA)

यह मधुमेह के लिए अति उपयोगी दवा है। यह थोड़ा कब्ज करता है। कफ एवं पीत्त विकार को मिटाता है। रक्त विकार एवं जलन को दूर करता है। उदर शूल में इसका सीरका बनाकर दिया जाता है। मधुमेह में इसका फल तथा छिलका उपयोगी है। इसका सेवन विधि एवं मात्रा जामून के जैसा होता है।

पिआर (चिरौंजी) (BUCHANANIA LATIFOLIA)

यह पौष्टिक फल है। सुखे मेवा में इसकी प्रधानता है। अनेकों पौष्टिक योग है जिसमें यह प्रधान औषधि है। पित्त रोग में इसे देने से औषध आहार दोनों का काम करता है। जलन को मिटाता है। यह कफ को भी दूर करता है। पैखाने में कब्ज यदि चिरस्थायी हो, तो कुछ दिन 10 ग्राम प्रतिदिन इसके सेवन से कब्ज होने की प्रवृति का समन करता है। जिससे अनिद्रा, बेचैनी, जलन, सुस्ती मिटती है। इसे बुखार की हालत में भी दिया जा सकता है। यह वीर्यवर्द्धक तथा पौष्टिक है।

सेवन विधि एवं मात्रा :— इसको 10 ग्राम तक खाया जा सकता है। इसके छाल का काढ़ा 20 ग्राम निर्देशित रोगों को दूर करता है।

खिरनी (MIMUSOPS HEXANDRA)

यह अति प्रसिद्ध पौष्टिक फल है। इधर कुछेक दशक से इसका पेड़ दुर्लभ होते जा रहा है। यह बल कारक, वीर्यवर्द्धक, मन के लगभग सभी बिमारियों को मिटाने में समर्थ, भ्रम मुर्च्छा इत्यादि को नष्ट करता है। यह यक्ष्मा (टी. बी.) की अति सुन्दर औषध है। रक्त विकार को भी शान्त करता है। आम लोग इसको फल के रूप में व्यवहार करते है।

सेवन विधि एवं मात्रा :— इसके छाल का काढ़ा 15 से 25 ग्राम तक लिया जाता है। फल 15 से 20 ग्राम तक लिया जाता है।

महुआ (BASSIA LATIFOLIA)

प्राचीन जमाने से ही इसका व्यवहार भारत के लोग करते आ रहे है। इसका फूल शराब बनाने के काम में लेते है। इसके बीज से तेल निकलता है। जो खाने के काम में भी लिया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार इसका फूल मीठा होता है। वीर्य वर्द्धक, शक्ति वर्द्धक है। यह समस्त वात रोग एवं पित्त रोग को मिटाता है। इसका गुण किसमिस के समान माना गया है। यह स्नायु पौष्टिक है इसके तेल के व्यवहार से अपतर्पक रोगों से मुक्ति मिलती है। अत्यधिक तेल का व्यवहार हानिकर है।

सेवन विधि एवं मात्रा :— इसके फूल 10 से 20 ग्राम तक छाल का चूर्ण 5 ग्राम तक व्यवहार में लाना चाहिए।

तूत (MORUS ALBA)

यह सिल्क वृक्ष भी है। रेशम के कीड़े इसके पत्तियों का आहार करते है तथा अपना वंश विस्तार करते है। जिसे अति उत्तम सिल्क का धागा निकाला जाता है। इसका फल खाया जाता है। वायु तथा पित्त के रोगी इससे ठीक होते है। इसका व्यवहार पौष्टिक खाद्य की तरह किया जाता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :— इसका फल 50 से 100 ग्राम तक खाया जा सकता है।

लिसोढ़ा (CORDIA MYXA)

यह विषनाशक औषध के रूप में प्राचीन समय से प्रयुक्त होता रहा है। यह रक्त रोग, बवासीर, फोड़ा, फुन्सी कफ के रोग के लिए उत्तम है। इसका फल मीठा लगता है तथा बहुत लोग इसे खाते हैं। बवासीर के रोगी इसके फल का हल्वा बनाकर बकरी के दूध में सेवन करें तो खूनी बवासीर से सदा–सदा के लिए मुक्ति मिलती है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसके छाल का चूर्ण 3 ग्राम तक। बीज 5 ग्राम तक। पत्ते 2 से 3 ग्राम तक लिया जाता है।

निर्मली (STRYCHNOS POTATORUM)

इसका व्यवहार औषध के रूप में तथा विषनाशक के रूप में किया जाता है। इसके फल से आँख के लिए दवा बनती है। यह अनेक नेत्र विकार नाशक है। जल को शुद्ध करने के लिए इसके बीज का व्यवहार किया जाता है। 80 प्रकार के वायु रोग तथा 40 प्रकार के कफ रोग में इसका व्यवहार किया जाता है।

सेवन विधि एवं मात्राः– आँख में इसको घीसकर थोड़ा लगाया जाता है। इससे काजल भी बनता है। इसका बीज पान के साथ लोग शौक से खाते है। निर्मली का बीज 1 ग्राम तक मधुमेह को मिटाने के लिए व्यवहार किया जाता है।

इमली (TAMARINDUS INDICA)

यह अति उपयोगी आयुर्वेदिक औषध है। पित्त के रोग, जिसमे जलन की प्रधानता रहती है यह ठीक करता है। वात कफ को भी नष्ट करता है। भुख को बढ़ाता है। रक्त विकार वालों को इसका सेवन नहीं करना चाहिए। इसको अनेको दवा बनाने के काम में लिया जाता है। इसके बीज को वीर्यवर्द्धक एवं स्तंभक के रूप में सेवन किया जाता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :–इसकी चटनी आचार का सेवन किया जाता है। बीज का 1 से 2 ग्राम चूर्ण लिया जाता है।

बहेड़ा (TERMINALIA BELERICA)

हर्रे बहेड़ा, आँवला के मिश्रित योग जिसे त्रिफला कहते है का एक घटक है। यह शरीर के अन्तः क्रिया को मजबूत बनाता है। हल्का दस्तावर है। यह खाँसी सर्दी मे लाभदायक है। इसे भूंज कर चूसने से गले का खरास तथा खांसी मिटती है। इसके चूर्ण को पलास के बीज के साथ मिश्रित 2 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करने पर सभी प्रकार के कृमि रोग मिटता है। आँख के रोगों में इसके काढ़े से आँख को धोने से लाभ होता है। यह बुद्धिवर्द्धक, कोढ़ निवारक, अर्स तथा ज्वर में लाभदायी है।

सेवन विधि :– इसका चूर्ण 2 से 3 ग्राम प्रतिदिन ।

हरड़ (TERMINALIA CHEBULA)

यह अति दिव्य औषधि है। आयुर्वेद के अनुसार माता के जैसा रक्षा करती है। पाचन संस्थान, रक्त परीभ्रमण संस्थान, मलमुत्र निष्कासन संस्थान सहित मन बुद्धि चित्त चेतन को बलवान तथा निरोग बनाता है। गुड़ के साथ 2 ग्राम इसका चूर्ण यदि प्रतिदिन कुछ दिनों तक लिया जाय तो सर्व रोग नाशक बन जाता है। दम्मा, आँख के रोग में विशेष लाभदायी है। जननेन्द्रिय के बिमारियों को भी यह मिटाता है।

सेवन विधि :– 2 से 3 ग्राम प्रतिदिन 1 से 2 बार।

आँवला (EMBLICA OFFICINALIS)

यह भारतीय जन जीवन के साथ धार्मिक एवं औषधीय वृक्ष के रूप में जुड़ा है। इसमें विटामिन सी की प्रचूरता आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने तय किया है। च्यवनप्राश का यह मुख्य घटक है। यह स्वास्थ्य रक्षा कर उम्र को बढ़ाता है। यह ह्रदय कि क्रिया को ताकत देता है। यह जलन को शान्त करता है। इसलिए वाह्य लेप के रूप में इसका व्यवहार किया जाता है। यह मुत्रल है तथा साधारण दस्तावर है। प्रतिदिन इसका सेवन यदि किया जाय तो रोग रक्षक तत्व की वृद्धि कर सेहत को सुधारता है। ताजा आँवला के लुग्दी को मधु मिलाकर सेवन करने से आँख, नाक, कान, उदर, त्वचा, विकृत होना, असमय बुढ़ा होना दूर करता है। केश के लिए यह टॉनिक का काम करता है। इसका सभी अंग प्रयुक्त होता है। इसका मुरब्बा ह्रदय रोग में लाभदायक होता है।

सेवन विधि एवं मात्रा :– इसका चूर्ण 2 से 3 ग्राम तक सेवनीय है।

पिराड़ (TREWIA NUDIFLORA)

यह वृक्ष जंगली आदिवासियों के बीच काफी प्रचलित है। इसके फल की सब्जी आंव के लिए उपयोगी है। इसके पत्ते का काढ़ा कफ एवं पित्त को शरीर के बाहर करने के लिए व्यवहार किया जाता है। इसके काढ़ा से तेल पकाकर व्यवहार करने से गठियां आम वात ठीक होता है। इसकी सब्जी खाने से पेचीस अतिसार नही होता। यदि हो गया है तो उसे यह मिटा देता है। इसके फल की खाने की मात्रा कम से कम 50 से 100 ग्राम तक है।